Envelope \ AXIX : #1

॥ ओ३म् ॥ AXIX.1 दूरभाष : 653743 पी०पी०

सर्व जातीय सर्वखाप पंचायत

प्रधान कार्यालय : गोमठ मन्दिर, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-३०

क्रमांक ---

दिनांक 28-11-88

सेवा में,

आदरणीय श्री रणसिंह जी प्रधान खाप पंचायत राजपूत

सादर नमस्ते

जैसा कि आपको ज्ञात है कि सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत भारत का विशालतम प्राचीन सामाजिक पंचायती संगठन है जो हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के ग्वालियर मण्डल तक फैला हुआ है। इस सर्वखाप पंचायत रूपी संगठन की शाखाएं लग-भग तीन हजार खापों (पालों) तपों, थाम्बों, बारहों के रूप में उपरोक्त क्षेत्र में फैली हुई है। सर्वखाप पंचायत के क्षेत्र में बसने वाले आठ करोड़ लोग, विशाल भारत में अपनी अलग महता लिए हुए इस बात के लिए जाने जाते हैं कि पंचायती इकाई का स्रोत, सर्वखाप पंचायत के माध्यम से, यही न्यायप्रिय लोग हैं। इन आठ करोड़ लोगों ने सर्वखाप पंचायत द्वारा, समय-समय पर, लिये गए फैसलों की धाक सारे भारत पर हजारों साल से बैठा रखी है। देश की सर्वोच्च सरकारी अदालत (पंचायत) उच्चतम न्यायालय द्वारा दिया गया फैसला तो लागू होने का मोहताज हो सकता है परन्तु सर्वखाप पंचायत द्वारा दिये गए निर्णयों को लागू होते देर नहीं लगती। अतः सर्वखाप पंचायत देश का सब से बड़ा सामाजिक न्यायालय है। अंग्रेज शासकों ने भी, सर्वखाप के क्षेत्र को The Home of Punchies (पंचों का घर) कहा है।

गत पांच मार्च के दिन सर्वखाप पंचायत, के प्रधान कार्यालय, गोमठ मन्दिर, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-३०, निकट महरोली में सम्पन्न हुई थी। उक्त पंचायत में जहां अनेक सामाजिक निर्णय लिये गए वहां पंचायत का झण्डा (पताका) जिसका रंग केसरिया जिसमें उगता हुआ सूर्य भी घोषित हुआ। उसी दिन पंचायत ने प्रति वर्ष होने वाली सर्वखाप पंचायत का दिन भी हमेशा के लिये फागुन की शिवरात्री का ही दिन नियत कर दिया। आगामी वर्ष (1989) में शिवरात्री सात मार्च को पड़ेगी। इस वर्ष की सर्वखाप पंचायत की तैयारी के लिये दिनांक 27-11-88 को सभी खापों के मुखिया, पंचायत के प्रधान कार्यालय में इकत्रित हुए थे जिन्होंने उक्त बैठक मे जो निर्णय लिये वे सब पंचों की जानकारी के लिये नीचे दिये जाकर परिपत्र के रूप में आप को प्रेषित हैं।

बैठक में व्यवस्था सम्बन्धी निर्णय :—

१- यह कि सात मार्च सन् 1989 को होने वाली सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत में शामिल होने से पहले, तैयारी रूप में, सभी खाप (पाल) तपे, बारहे, थाम्बों की सभी बिरादरियां अपनी-२ पंचायतें बुलाकर सर्वखाप पंचायत के कार्य-क्रम (एजेण्डा) में आने वाले विषयों पर खुल कर विचार करें और अपनी-अपनी पंचायतों के निर्णयों और विचारों की जानकारी सर्वखाप पंचायत के प्रधान कार्यालय में दस फरवरी से पहले पहले पहुंचा दें।

२- यह कि सभी खापें अपनी-अपनी पंचायतों में यह पास करवा कर व्यवस्था करें कि प्रत्येक खाप को अपने-अपने वाहनों द्वारा सर्वखाप पंचायत, में शामिल होना है और प्रत्येक वाहन पर सर्वखाप पंचायत का झण्डा (केसरिया रंग के कपड़े पर उगता सूर्य) तथा अपनी खाप का बैनर लगा कर दिल्ली पहुंचे।

३. यह कि प्रत्येक पंचायत को चाहिए कि वे सात मार्च को होने वाली सर्वखाप पंचायत की जानकारी अपने क्षेत्र के समाचार पत्रों में दें और पंचायत का खूब जोरदार ढंग से प्रचार करवाएं।

४. सात मार्च 1989 को दिल्ली में होने वाली सर्वखाप पंचायत के सारे प्रबन्ध की जिम्मेदारी पालम खाप व दिल्ली प्रदेश ने अपने ऊपर ली है। बैठक में नेबसराय के प्रतिष्ठित पंच मास्टर रतिराम जी तथा मैदान गढ़ी के प्रधान चौ० नत्थू सिंह व अन्य पंचों ने जिम्मेदारी की घोषणा की जिसका हर्ष ध्वनि से बैठक में स्वागत किया गया।

सर्वखाप पंचायत का कार्यक्रम:—

सात मार्च 1989 को सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत में जो विचारणीय विषय चुने गए वे हैं कि समाज को जो दहेज रूपी घुन लगा हुआ है उस से कैसे छुटकारा पाया जाये? विवाह के पश्चात् छोड़ी हुई लड़कियों को पुनः भिजवाया जाए, विधवाओं तथा अबलाओं की समस्या पर विचार, गांवो के पढ़े लिखे बेरोजगार युवकों की बेरोजगारी का समाधान, किसानों व ग्रामीण लोगों की बिगड़ी हुई अर्थव्यवस्था की विषमता पर विचार तथा सर्वखाप पंचायत की इकाई गांव से लेकर खाप (पाल) बारहे, तपे, थाम्बे व क्षेत्रों तक के सगठनों को सुदृढ़ व आपसी झगड़े व मुकद्दमें बाजी को समाप्त करना आदि।

रास्ता : बस अड्डे व रेलवे स्टेशन से बस नं० 501 से साकेत पहुंचे फिर 509 से मैदान गढ़ी, दिल्ली के प्रत्येक स्थान से बस द्वारा महरोली पहुंचे, महरोली से 516 व 523 द्वारा गांव सतबड़ी में उतर कर गोमठ मन्दिर, मैदान गढ़ी पहुंचे।

निवेदक : **स्वामी कर्मपाल** अध्यक्ष

सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत, गोमठ मन्दिर, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-30

ENV. AXIX, #2
(AXIX.2)

॥ ओ३म् ॥

'जाट वीरों का इतिहास' की सूचना

कैप्टन दलीपसिंह अहलावत द्वारा लिखित 'जाट वीरों का इतिहास' पुस्तक छपकर तैयार हो गई है। इस पुस्तक के बड़े साइज में 1096 पृष्ठ हैं तथा एकादश अध्याय हैं जिनमें मोटे तौर से निम्नलिखित प्रकरण हैं:- सृष्टि एवं वेदों की रचना, आर्यों का मूल निवास-स्थान भारतवर्ष, ब्रह्मा की सब वंशावली, जाटों की उत्पत्ति एवं विशेषताएं, जाट क्षत्रिय आर्य एवं भारतीय हैं। आदि सृष्टि या वैदिक काल में जाट-वंशों का निर्माण तथा राज्य। इसी प्रकार रामायण काल तथा महाभारत काल में जाट वीरों का राज्य। महाभारत युद्ध के बाद विदेशों में तथा भारतवर्ष में जाट राज्य। जाट, गूजर, अहीर, राजपूत, मराठा एक ही श्रेणी के हैं। भारतवर्ष पर विदेशी आक्रमणकारियों से जाटों के युद्ध। दिल्ली साम्राज्य के मुसलमान बादशाह और जाट। भरतपुर एवं धौलपुर जाटराज्य तथा पंजाब में सिख जाट राज्य का वर्णन। सन् 1857 ई० के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में तथा सन् 1947 ई० में भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्ति में जाटों का योगदान। आधुनिक युग में जाटों की महत्ता।

आशा है कि भारतीय वीर इसे पढ़कर लाभ उठायेंगे। धन्यवाद।

सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य 200 रुपये है।

नोटः—इस ग्रन्थ का विमोचन गरीब एवं किसानों के मसीहा, हरियाणा केसरी चौ० देवीलाल मुख्यमन्त्री हरियाणा के करकमलों द्वारा, दीनबन्धु चौ० सर छोटूराम जी की जयन्ती वसन्त पंचमी 2045 वि०, 10 फरवरी सन् 1989 के शुभ अवसर पर, छोटूराम पार्क रोहतक में किया जाएगा।

स्थायी पता :
कैप्टन दलीपसिंह अहलावत
गांव व डाकघर डीघल
जिला रोहतक

पुस्तक प्राप्ति एवं
पत्र व्यवहार का पता :
कैप्टन दलीपसिंह अहलावत
कैनाल रैस्ट हाउस, रोहतक (हरियाणा)

आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक। फोन : 2874

Env AXIX #3

॥ ओ३म ॥

AXIX 3

दिल्ली में

6 मार्च सोमवार, शिवरात्री को

विराट

सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत

स्थान :- गोमठ मन्दिर, मैदान गढ़ी (महरौली) नई दिल्ली-30

जैसा कि आपको ज्ञात है कि सर्वजातीय सर्व खाप पंचायत भारत का विशाल प्राचीन सामाजिक पंचायती संगठन है जो हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के ग्वालियर मण्डल तक फैला हुआ है। इस सर्वखाप पंचायत रूपी सगठन की शाखाए लग-भग तीन हजार खापों (पालों) तपों, थाम्बों, बारहों के रूप में उपरोक्त क्षेत्र में फली हुइ है। सर्वखाप पंचायत के क्षेत्र में बसने वाले आठ करोड़ लोग, विशाल भारत में अपनी अलग महत्ता लिए हुए इस बात के लिए जाने जाते हैं कि पंचायती इकाई का स्रोत, सर्वखाप पंचायत के माध्यम से, यही न्यायप्रिय लोग हैं। इन आठ करोड़ लोगों ने सर्वखाप पंचायत द्वारा, समय समय पर, लिए गए फसलों की धाक सारे भारत पर हजारों साल से बठा रखी है। देश की सर्वोच्च सरकारी अदालत (पंचायत) उच्चत्तम न्यायालय द्वारा किया गया फैसला तो लागू होने का मोहताज हो सकता है परन्तु सर्वखाप पंचायत द्वारा दिये गए निर्णयों को लागू होते देर नहीं लगती। अत: सवखाप पंचायत देश का सब से बड़ा सामाजिक न्यायालय है। अंग्रेज शासकों ने भी, सर्वखाप के क्षेत्र को The Home of Punchas (पंचों का घर) कहा है।

सवखाप पंचायत, गत पांच मार्च के दिन प्रधान कार्यालय, गोमठ मन्दिर, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-३०, (महरोली) में सम्पन्न हुई थी। उक्त पंचायत में जहां अनेक सामाजिक निर्णय लिए गए वहां पंचायत का झण्डा (पताका) जिसका रंग केसरिया जिसमें उगता हुआ सूर्य भी घोषित हुआ। उसी दिन पंचायत ने प्रति वर्ष होने वाली सर्वखाप पंचायत का दिन भी हमेशा के लिये फागुन की शिवरात्री का ही दिन नियत कर दिया।

हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान तथा उत्तरप्रदेश की सभी खाप,(पाल), थाम्बे, बारहे व सभी बिरादरियों की विराट सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत 6 मार्च, 1989 को प्रात: दस बजे गोमठ मन्दिर, मदान गढ़ी (महरौली) नई दिल्ली—३० में हो रही हैं जिसमें चारों प्रान्तों की सभी खाप (सबखाप) निम्न मुद्दों पर फैसले ले रही है।

- दहेज पर पंचायती प्रतिबन्ध।
- विवाहित छोड़ी हुई लड़कियों को उनकी सुसराल भिजवाना।
- विधवाओं व अबलाओं की सामाजिक सुरक्षा।
- आपसी मुकदमे बाजी व झगड़ों को पंचायती फैसलों द्वारा निपटाना।
- गांव से सर्वखाप पंचायत तक के संगठन को सुदृढ़ करना।
- ग्रामीण बेरोजगार शिक्षित युवक कैसे आत्मनिर्भर व स्वाभिमानी हों ?
- पीड़ित शोषित किसान व गांव के लोगों की गिरती अर्थव्यवस्था कैसे मजबूत हो ?
- सभी खापें अपनी खाप का बैनर व सर्वखाप का झण्डा (केसरिया रंग के कपड़े पर उगता हुआ सूर्य लगा कर 6 मार्च को दस बजे तक दिल्ली पहुंचिये।
- प्रत्येक खाप के मुखिया एवं तपदार से प्रार्थना है कि अपनी अपनी खाप में चिठ्ठी फाड़ (लिख) कर 6 मार्च सर्वखाप पंचायत की सूचना दे दीजिए व प्रत्येक गांव में मुनादी करायें तथा इस पंचायती इश्तिहार को सार्वजनिक स्थान पर चिपका दीजिये।

मेरी चारों प्रान्तों की सभी खापों व बिरादरियों से प्रार्थना है कि भारी संख्या में 6 मार्च को प्रात: दस बजे तक दिल्ली गोमठ मन्दिर पहुंचे।

- भोजन आवास व अन्य सभी व्यवस्थायें प्रबन्ध समिति गोमठ मन्दिर द्वारा की जायेगी।

रास्ता : बस अड्डे व रेलवे स्टेशन से बस नं 501 से साकेत पहुंचें फिर 509 से मैदान गढ़ी, या दिल्ली के किसी भी स्थान से बस द्वारा महरौली पहुंचें, महरौली से 516 व 523 द्वारा गांव सतबड़ी में उतरकर गोमठ मन्दिर मैदान गढ़ी पहुंचे।

निवेदक :— **स्वामी कर्मपाल**

अध्यक्ष, गोमठ मन्दिर, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-30/प्रधान :- सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत

Centre for Policy Studies Dharampal Archives CPS-EA-19 www.cpsindia.org

XIX duplicate 43

।। ओउम् ।।

दिल्ली में

6 मार्च सोमवार, शिवरात्री को

विराट

सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत में पारित प्रस्ताव

स्थान :- गोमठ मन्दिर, मैदान गढ़ी (महरौली) नई दिल्ली-30

में पारित प्रस्ताव

1. भारत की ग्रामीण जनसंख्या को आधार मान कर प्रत्येक सरकारी व निजी क्षेत्रो की सेवाओं में पूर्ण प्रतिनिधित्व दिया जावे व ग्रामीण क्षेत्रों मे कुटीर उद्योग. बडे कल कारखाने, विद्यालय, औषधालय, सड़क, सार्वजनिक निर्माणो व विकास परियोजनायें ग्रामीण क्षेत्रो में लगाकर ग्रामीणों को सेवाओं में लिया जावे और अन्य सभी बेरोजगारी की समस्याओं पर विचार करने के लिये एक उप समिति गठित कर दी गई हैं ।

2. प्रत्येक फसल का खरीद मूल्य उसकी लागत समय व लाभ जोड़कर प्रत्येक फसल की बुवाई से दो महीने पूर्व सरकार घोषित करें तथा सभी दैविक प्रकोप जैसे सूखा, बाढ़, ओला, कीडे व रोग खराब बीज खाद व कीटनाशक दवाईयो द्वारा हानि, नहर व बिजली की अनियमितताओ द्वारा नुकसान को आर्थिक सहायता द्वारा केन्द्रिय व राज्य सरकारे किसान को आर्थिक सहायता दें।

3. भारत में शिक्षा का माध्यम राष्ट्र भाषा हिन्दी अनिवार्य हो व सभी भाषाओं की जननी संस्कृत को उसका स्थान दिया जावे तथा प्रदेशों की प्रादेशिक भाषाओं को पूर्ण उन्नत किया जाये ।

4. दिल्ली ग्रामीण क्षेत्रो में वे सभी जन सुविधाये शीघ्र दी जावे जो विकसित कालोनी को प्राप्त है जैसे जल-मल व्ययन, बिजली, सड़के, पार्क, विद्यालय औषधालय, बैंक, बसे, सुपर बाजार, डाक, टेलीफोन आदि तथा ग्रामीण विकास की सौ वर्षीय योजना बनाकर 1908 के लालडोरा को बढ़ाया जावे और किसान की इच्छा से बाजार भाव पर सरकार जमीन खरीद सकती हैं ।

.....2/-

5. प्रत्येक विधान सभा व संसद के चुनाव मे जो चरित्रवान, योग्य, अनुभवी, स्वच्छ छवि, ग्रामीण विकास परक, राष्ट्रवादी, समाज सेवी व खाप द्वारा अनुमोदित प्रत्याशियों को सर्वजातिय सर्वखाप पंचायत पूर्ण समर्थन देगी ।

6. साम्प्रदायिकता, पृथकतावाद, हिंसा, पाखण्ड भ्रष्टाचार, भारत की एकता विरोधी आदि गतिविधियो की यह पचांयत घोर निन्दा करती है व इन्हे रोकने के लिये कारगर पचांयती कदम उठायेगी ।

7. सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत का वार्षिक अधिवेशन, पंचायत के प्रधान कार्यालय गोमठ मन्दिर, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-30 के प्रांगण में फाल्गुन मास को शिवरात्री वाले दिन हुआ करेगा व प्रत्येक खाप, पाल, थाम्बा, तपा, बारहा आदि सभी पचांयतो मे व उनके पचांयती स्थान पर केसरिया झण्डा उगता हुआ सूर्य लगाया जायेगा ।

8. सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत का कार्यक्षेत्र हरियाणा, दिल्ली, पश्चिमी उत्र प्रदेश, उत्तरी राजस्थान और मध्यप्रदेश का उत्तरी क्षेत्र है । तथा पूरे भारत मे ग्रामीण सामाजिक संगठनो के आधार पर विस्तार किया जायेगा । सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत सभी बिरादरियों के तपे (थाम्बे) बारहे और लगभग तीन हजार खापों (पालों) को मिलाकर बनी है ।

9. यह पंचायत सम्मेलन 5 मार्च 1988 को सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत में पारित हुए सभी फैसलो को कुछ सन्शोधनों के साथ पारित करता है ।

निवेदक

स्वामी कर्मपाल

(स्वामी कर्मपाल)

अध्यक्ष सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत

गोमठ मन्दिर,

मैदान गढ़ी,

नई दिल्ली-110030.

दूरभाष न0- 653743 पी.पी.

Centre for Policy Studies Dharampal Archives CPS-EA-19 www.cpsindia.org

Env AXIX: #4

AXIX.4

पंचायती संगठन ने प्राचीन समय से ही जाटों के राजनैतिक-सामाजिक एवं आर्थिक जीवन को बहुत हद तक प्रमाणित किया है । इसी संगठन की वजह से वे अपने पारंपरिक रीति-रिवाजों को आज भी जिंदा रखे हुए हैं । उत्तरी भारत में जाटों द्वारा अधिकाधिक जमीदारियां अर्जित करने एवं अपने प्रभाव को बढ़ाने में इस संगठन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है । जाट जाति का गणतंत्रीय व्यवस्था के प्रति लगाव, व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रति रूझान तथा निरंकुश एवं तानाशाह व्यवस्था के प्रति विद्वेष इसी संगठन की देन रही है ।

आधुनिक पंचायती व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि प्राचीन तथा मध्यकालीन भारत में भी इस संगठन की शक्तियां एवं कार्य वहीं थे जो आज हैं । यदि हम इन दोनों की आज के संदर्भ में तुलना करें तो प्राचीन एवं मध्यकालीन पंचायतें यदि एक किला थी तो आधुनिक पंचायतें मात्र उस किले के खंडहर हैं । इससे तात्पर्य यह नहीं है कि प्राचीन पंचायत प्रणाली पूर्णत: नष्ट हो चुकी है अपितु यह आज भी सुचारू रूप से कार्य कर रही है परंतु आज निश्चित रूप से अपनी राजनैतिक गरिमा को इसने खो दिया है ।

सर्वखाप पंचायत का अर्थ एवं पृष्ठभूमि-

सर्वखाप पंचायत का शाब्दिक अर्थ है-एक संगठन या एक विस्तत क्षेत्र में न्याय करने वाली पंचायतों का एक समूह । वैसे "सर्व" से तात्पर्य है "सब या अनेक" खाप का अर्थ है संगठन या समूह तथा पंचायत का अर्थ है-चुने हुए न्यायविदों की एक कौंसिल जो झगड़ों का निपटारा करती है । इसे अधिक स्पष्ट करते हुए सर्वखाप पंचायत का अर्थ हुआ एक पूरे भू-प्रदेश में बसे सैंकड़ों, हजारों गांव की प्रतिनिधि, प्रभुसत्ता संपन्न एवं सार्वभौम पंचायत जिसे आज के संदर्भ में एक संपूर्ण गणराज्य की संज्ञा दी जा सकती है ।

दिल्ली के चारों ओर बसे लगभग 150-200 मील के क्षेत्र में जिसे मध्यकालीन भारत में "हरियाणा" के नाम से जाना जाता था के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक गतिविधियों की केंद्र बिंदु यही सर्वखाप पंचायत रही हैं । इस संगठन ने लोक धर्म की रक्षा विकट संघर्षों से जूझ कर की तथा अन्याय के सामने सिर नहीं झुकाया । राजपूत काल (हर्षवर्धन का समय) से लेकर ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना तक सर्वखाप पंचायत अपने क्षेत्र की हर गतिविधि की संचालक रही । महम (हरियाणा में रोहतक जिले में) में प्राचीन "चौबीसी का चबूतरा" इसी परंपरा पर आधारित महम खाप के चौबीस गांवों का पंचायती मंच आज भी हर तरह के निर्णय लेने का एक मंच है । इसी तरह

क पंचायती मंच "खाप" ग्राम समूहों की परंपरागत पंचायत के हैं जो पूर्ण रूप से प्रभावी हैं । पंचायत द्वारा दिए गए निर्णय जैसे हुक्का-पानी बंद, पांच या दस साल का "दिसौटा"(गांव से बहिष्कार) आदि सहर्ष स्वीकार किए जाते हैं । चौ॰महेंद्र सिंह टिकैत द्वारा आरंभ किया गया "किसान आंदोलन" भी इसी परंपरा पर आधारित इस संगठन की प्राचीनता एवं महत्ता की ओर संकेत करता है । सर्वखाप पंचायती संगठन की एक विशेषता यह है कि इसके प्रभाव क्षेत्र में आने वाले गांव गोत्र के आधार पर एक विशिष्ट स्थान पर इकट्ठे बसे हुए हैं तथा उसी गोत्र के नाम पर या किसी अन्य महत्वपूर्ण घटना, स्थान या गिनती के आधार पर खापों का नाम रखा गया है । सर्वखाप पंचायत की यह गणतंत्रीय प्रणाली लगभग ढाई हजार वर्ष पुरानी है । बौद्ध साहित्य में सोलह "महाजनपदों" का उल्लेख तथा उनमें से पंद्रह का उत्तरी भारत में होना प्राचीन गण-परंपरा का ज्वलंत उदाहरण है । आगे चल कर महाजनपदों ने "गणों" तथा उसके उपरांत "गणसंघों" का रूप धारण किया । सिकंदर को वास्तविक लोहा इन्हीं गणों से लेना पड़ा तथा जब सिकंदर की सेनाओं को पता चला कि व्यास नदी के उस पार शक्तिशाली योधेयों से उन्हें टकराना होगा तो वे हिम्मत हार बैठी और व्यास पार करने से मना कर दिया । खोखराकोट(हरियाणा में रोहतक के नजदीक) में की गई खुदाई से प्राप्त सिक्कों तथा मुहरों से पता चलता है कि योधेय गण 400 ई॰ पूर्व से लेकर लगभग छठी शताब्दी तक गंगा और शतद्रु(सतलुज) के बीच के भू प्रदेश का शासन संभाले हुए थे । उस समय के पांच बड़े गणराज्यों(गणों) (योधेय, कुनिंद, अग्रेय, आर्जुनायन और भद्र) ने मिल कर अपने आपको योधेय महासंघ के रूप में संगठित किया और रोहितक(रोहतक) को अपनी राजधानी बनाया । भास्कर भाव सेलेतोरे ने अपनी पुस्तक "एंशियंट इंडियन पालिटिकल थाँट एंड इंस्टीच्यूसन" में कहा है "योधेयों की गणतंत्रात्मक प्रणाली उत्तम श्रेणी की थी ।

निरंतर युद्धों में भाग लेने के कारण अंततः योधेय में ह्रास हुआ तथा अपनी महत्ता खो दी और ये छोटे-छोटे जनपदों में बिखर गए । हर्षवर्धन ने इन बिखरी हुई शक्तियों को पुनः संगठित किया । ग्राम-समूह के आधार पर संगठित ये जनपद "खाप" या "पाल" कहलाए । एक बड़े भूभाग में बनी ऐसी अनेकों खाप मिल कर "सर्वखाप" कहलाई । सर्वखाप पंचायत के प्रभुत्व में आने वाले भाग की सीमाएं भारत की सीमाओं की तरह घटती-बढ़ती रही परंतु सामान्य रूप से सर्वखाप पंचायत के प्रभुत्व में आने वाले भू-प्रदेश जिसे हरियाणा के नाम से जाना जाता था-की सीमाएं दिल्ली के चारों ओर लगभग 150-200 मील तक रही ।

जाटों द्वारा पंचायती प्रणाली का व्यावहारिक प्रयोग -

जाट प्राचीन समय से ही पंचायती संगठन की गणतंत्रीय प्रणाली के समर्थक रहे हैं । इनके द्वारा अपनाई जाने वाली इस गणतंत्रीय व्यवस्था का नाम समयानुसार बदलता रहा है । हर्षवर्धन के समय से इसे सर्वखाप पंचायत के नाम से जाना जाने लगा । जे॰एन॰ सरकार जाट जाति का गणतंत्रीय व्यवस्था से संबंध पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं, "आदिकाल से आज तक जाट प्रजातांत्रिक परंपरा के साक्षी रहे हैं और इसी कारण समस्त जाति एकता, समानता, मिलनसारी अथवा व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आधारित है । जाट जाति ने सदैव अपने आपको गोत्र के आधार पर खाप बना कर (ग्राम समूह पर आधारित) पंचायती संगठन में बांधे रखा है । उत्तर प्रदेश में उत्तरी पश्चिमी भाग में रहने वाले जाट पंजाब राज्य में से आकर बसने से पूर्व पंचायती संगठन को अपनाए हुए थे ।

भारत की राजधानी दिल्ली के आसपास कई राज्यों में बिना किसी भेदभाव के सभी जातियां उपजातियां मिल कर अपने झगड़ों का निपटारा और गांव या नगरों की उन्नति अपनी-अपनी पंचायत द्वारा करती थी । जब-जब किसी बाहरी शक्ति ने देश पर आक्रमण किया या केंद्रीय सत्ता ने इस क्षेत्र के लोगों के सामाजिक व धार्मिक जीवन में हस्तक्षेप करने की चेष्टा की गई तब सर्वखाप पंचायत ने इसके विरुद्ध डट कर मुकाबला किया व अन्याय के सामने कभी सिर नहीं झुकाया । शायद यही कारण है कि समय-समय पर शासक वर्ग द्वारा इस प्रभु सत्ता संपन्न इस गणतंत्रीय प्रणाली को एक निरंकुश शासन की स्थापना में बाधक समझ कर प्रतिबंध लगाए गए । वि॰संवत 1249/ 1192 ई॰ में कुतुबद्दीन एबक ने सर्वखाप पंचायत की बैठक होने पर प्रतिबंध लगा दिया तथा इसी प्रकार वि॰सं॰1736, बैशाख शुदि /1679 ई॰ में औरंगजेब ने पंचायत पर कुछ प्रतिबंध लगा दिए । इन सबके बावजूद सर्वखाप पंचायत की बैठक होती रही । वि॰सं॰1887/ 1830 ई॰में पंचायती संगठन को ईस्ट इंडिया कंपनी ने सूरजमल पुत्र श्री गुलाब(वजीर बालायन खाप) के नाम एक पत्र दिया जिसमें पंचायत के अधिकार समाप्त कर दिए गए । इस तरह अंग्रेजों ने सर्वखाप पंचायत पर पाबंदी लगा कर तथा झगड़ों का निपटारा न्यायालयों द्वारा करने का आदेश जारी करके इस प्राचीन गणतंत्रीय व्यवस्था को काफी कमजोर कर दिया ।

गंगा और सतलुज के बीच के भू-प्रदेश के स्वाभिमान लोगों का जीवन निरंतर विदेशी हमलावरों से जूझने एवं अन्याय के विरुद्ध आवाज बुलंद करने में बीता है । शायद ही कोई वर्ष ऐसा बीतता हो जब किसी हमलावर से उन्हें टक्कर न लेनी पड़ी हो । सर्वखाप पंचायत के क्रियाकलापों में सभी जातियां बड़े उत्साह से भाग लेती थीं । पंचायती संगठन का एक भाट या

लेखक जोहर इस विषय पर प्रकाश डालते हुए लिखता है कि सर्वखाप पंचायत में सभी जाति एवं बिरादरियों का अटूट विश्वास है । पंचायती वीर योद्धा देश रक्षा के नाम पर लड़ते हैं,भाड़े के टट्टू नहीं हैं । देश की रक्षा के लिए आंधी की भांति एक हो,बिजली के समान शत्रु पर टूट नाकों चने चबा देते हैं,रण भूमि से हटना जानते ही नहीं । सर्वखाप पंचायत की पाचीनता एवं इतिहास पर व्यापक रूप से प्रकाश डालते हुए संत रामशरण ने अपने भाषण में जो उन्होंने वि॰सं॰1798/1714 ई॰ में दिया तथा जिसका रिकार्ड सर्वखाप पंचायत के भाट रामदास ने किया है,कहा "हरियाणा की वीर भूमि के वीरो,आपका दिल्ली के चारों ओर 150 कोस तक प्राचीन काल से संगठन चला आ रहा है । यह संगठन आपके पूर्वजों ने बड़ी-बड़ी कुर्बानी देकर सुरक्षित रख कर आप तक पहुंचाया है । अब आप इस संगठन को शुद्ध रख कर संभालें तथा अपने पूर्वजों की मान-मर्यादा का ध्यान रख कर इस संगठन को स्थापित रखो । यह संगठन देश की रक्षा हेतु एक बहुत भारी शस्त्र है जो सभी असफलताओं से कोसों दूर रहता है । मेरा यह बहुत बड़ा अनुभव है पहले नहीं,आज नहीं,अपितु भविष्य में भी सफल रहेगा । परंतु चरित्र हीन,पक्षपाती एवं स्वार्थी लोगों को इस संगठन से दूर रखना । आप अपने पूर्वजों के बल संगठन को भूल गए क्या आपने सुना नहीं,पढ़ा नहीं,बाबर, एवं फिरोज,तुगलक व औरंगजेब के समय में लाखों की संख्या में बलिवेदी पर ~~अफके=सकबे=हके=हे~~ चढ़ गए और अब नादिर शाह बलिवेदी आपके सामने ही है । यह सब संगठन के बल पर ही हुए और इन सबको परास्त कर आप अपनी रक्षा संगठन बल पर ही कर रहे हैं । इसीलिए इस संगठन को और दृढ़ बनावो । प्रेमभाव,पुरूषार्थ,सत्य व्यवहार रूपी अमृत का पान कर सत्य मार्ग पर चल कर बुजुर्गों की भांति देश की रक्षा करो । यह शक्ति आपको पूर्वजों ने दी है और आपने इस शक्ति को आगे आने वाली संतान को परंपरानुसार सौंपना है ताकि देश की रक्षा होती चली जाए । ईश्वर,मौत और कारनामों को कभी न भूलो । यही आपका इतिहास है,आपको जगाने वाला है । जागो और जगाओ ।"

सर्वखाप पंचायती संगठन अपने आप में एक विशिष्ट प्रकार का संगठन था । इस संगठन में जाट अगुआ थे जबकि दूसरी जातियां जैसे गूजर,अहीर, राजपूत,रोड,रवे,सैनी तथा ब्राह्मण आदि जातियां भी इनके साथ थी । हालांकि वे राजपूत जो सर्वखाप पंचायत के संगठन के अंतर्गत आते थे उन्होंने सर्वखाप पंचायत की प्रत्येक गतिविधि में सक्रिय भाग लिया लेकिन फिर भी स्वार्थप्रिय तथा पदलोलुप जयपुर राजघराने के राजपूत जिनके अपने निजी स्वार्थ थे ने सदैव इस संगठन का विरोध किया तथा मुगल शासकों का पक्ष

लिया । शायद यही कारण है कि राजस्थान के एक मुसलमान संत पीर रिजवी ने लिखा है कि "राजपूतों का जोश मुदी हो गया था और मुगल राज को हमेशा अपना सरताज समझ बैठे थे । दिल्ली के आसपास की पंचायतों को देख कर उनमें कुछ जिंदगी के असरात मौजूद थे ।"

सर्वखाप पंचायत ने अपने संगठन को सुचारू रूप से चलाने के लिए विभिन्न जातियों का इसमें समावेश कर रखा था । उदाहरण के लिए ब्राह्मण इसके गुरू थे,कायस्थ मुंशी,भाट लेखक,चारण यश गीत गानेवाले,डूब संदेशवाहक, बाल्मीकि नरसिंगा बजाने वाले तथा जाट इसके अगुआ रहे हैं । इसके साथ जाट,गूजर,रोड,रवे,राजपूत,सैनी,सुनार धनकर गड़रिए आदि सभी युद्ध करने वाली जातियां रही हैं ।

सर्वखाप पंचायत का इतिहास लिखने में भाटों का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा ह । सर्वखाप पंचायत के अपने भाट होते थे जो सर्वखाप पंचायत की गतिविधियों से संबंधित इतिहास लिखते थे । इनके भरण-पोषण का कार्य स्वयं पंचायत करती थी । मुश्ताक अहमद मिरासी,जो सर्वखाप पंचायत के भाट थे इस संबंध में लिखता है-"बालायन,सलकलान आदि पालों(खापों) की तरफ से हमारी जिंदगी बसर करने के लिए हमें सब तरह से इमदाद मिलती है । फसल से हमें अनाज,गुड़,शादियों और हकीक पर एक रूपया देते हैं । एक घोड़ा,एक ऊंटनी पंचायत की तरफ से मिलती है । हम दूर-दराज का सफर तय करते हैं । पैगाम के साथ । अल्लाह ताला के भरोसे जिंदा है ।"

बढ़ई तथा लोहार युद्ध में इस्तेमाल होने वाली युद्ध सामग्री सर्वखाप पंचायती योद्धाओं के लिए निर्मित करते थे । इनके जीवन के भरण-पोषण का भारत भी पंचायत स्वयं उठाती थी । हिंदू जातियों के अतिरिक्त मुसलमानों का भी पंचायती संगठन में पूर्ण विश्वास था तथा वे भी अपने हिंदू-भाइयों की भांति इस संगठन की प्रत्येक गतिविधि में सक्रिय भाग लेते थे । सर्वखाप पंचायती संगठन के अंतर्गत आने वाली सभी जातियों में आपस में भाईचारा था ।

प्रकृति या चरित्र

सर्वखाप पंचायती संगठन अत्यंत पवित्र,चरित्रवान,सदाचारी,न्यायप्रिय तथा निस्वार्थी लोगों का संगठन था । सभी जातियों का इस संगठन में अटूट विश्वास था ।इसी संदर्भ में पंडित कान्हाराम (सर्वखाप पंचायत के तत्कालीन गुरू) लिखते हैं,"ये लोग पंचायत के वक्त अपनी-अपनी बात पर खूब लड़ते हैं । यदि कोई बात पंचायत में बहुमत से तय हो जाती है तो क्या काम है कि उसका विरोध करे या उसके खिलाफ कोई कदम उठाए । इस बात को लोग महापाप समझते हैं । यदि किसी पंच के खानदान में कोई आदमी गलती कर

देता तो पंचायत में वह अपने कुल के उस आदमी की कभी न तो तरफदारी करता था और न ही साथ देता था । पंच अपने पुत्र तक की सारी बातें पंचायत के सामने बता देता था और पंचायत जो सजा उसके वास्ते मुकरर करती थी उसका पालन पूर्ण रूप से करता था । अपने प्यार से प्यारे के ऐब (गलत आदत या कार्य) को पंचायत के सामने रख देता था । पंचायत में कोई सिफारिश, रिश्वत या कोशिश पाप समझी जाती थी । खतावार (कसूरवार) भी अपनी खता छिपाने के बजाय पंचायत के सामने प्रकट कर देना अच्छा समझता था ।"

हालांकि जाटों में गोत्र श्रेष्ठता की भावना बहुत अधिक उत्कृष्ट थी लेकिन सर्वखाप पंचायत की सेना में सभी जाति एवं गोत्र के लोगों का प्रतिनिधित्व था । उदाहरण के लिए मथुरा सभा जो वि॰सं॰ 1589/1532 ई॰ में बलदेव चौबे की अध्यक्षता में हुई सभा में निर्णय लिया गया कि चित्तौड़ की रक्षा के लिए सर्वखाप पंचायत हुमायूं का साथ देगी । इसके लिए 11 हजार पंचायती सेना तैयार की गई जिसमें हरपत जाट प्रधान सेनापति था । गंगा बिशन रवा उपसेनापति, सूबेदार किराना त्यागी उपसेनापति, गंगा सहाय गूजर उपसेनापति, धन्नू भंगी उपसेनापति, कदमी कोली जाट उपसेनापति, राज कुंभकार उपसेनापति तथा छजबा नाई उपसेनापति थे । वीर तथा गुरिल्ला युद्ध में पारंगत योद्धा को ही सेना में सम्मिलित किया जाता था तथा उसे ही पंचायती सेना का प्रधान सेनापति नियुक्त किया जाता था चाहे वह किसी भी जाति से संबंधित क्यों न हो । औरंगजेब की सेना के विरुद्ध सर्वखाप पंचायत की जो सेना गुरु गोविंद सिंह के समर्थन में लड़ी उस सेना में सूरज भंगी जाति से संबंधित था । इस संगठन में सेनापति या प्रधान सेनापति के पद पर नियुक्ति से पहले उसे अपने शौर्य की परीक्षा देनी पड़ती थी । विभिन्न स्तरों पर संगठित इस पंचायती संगठन में विभिन्न जातियों को उनका उचित प्रतिनिधित्व दिया जाता था । शाहजहां, मुगल सम्राट के शासनकाल में वि॰सं॰ 1688/1631 ई॰ में जो सर्वखाप पंचायती मंडल था उनमें पंडित रामशरण, पीर अजमत अली, चौ॰जादो राम (वह व्यक्ति जिसके नाम बादशाह शाहजहां ने फरमान जारी किया था ।) चौ॰ प्रेमचंद, चौ॰हरकरण, चौनामल जैन (बनिया), चरणा (कुम्हार), ईश्वरी प्रसाद तथा रामदत्त (ब्राह्मण) जांगड़ा (बढ़ई) रजवा सेठ (बनिया) तथा कालू (भंगी) सम्मिलित थे ।

आवश्यकता पड़ने पर सर्वखाप पंचायत गरीब, असहाय तथा जरूरतमंद व्यक्तियों की मदद करती थी । युद्ध करते समय यदि कोई योद्धा मारा जाता था तब सर्वखाप पंचायत मृतक योद्धा के परिवार के सदस्यों के भरण-पोषण की जिम्मेदारी लेती थी । उसके बच्चों को उचित शिक्षा देने का प्रबंध भी करती थी । यह एक अदभुत प्रकार का संगठन था जिसमें योद्धा बिना वेतन लिए

देश तथा धर्म की रक्षा के लिए लड़ते थे । आम जनता में इस संगठन के प्रति अटूट निष्ठा थी क्योंकि यह संगठन जीवन में उच्च नैतिक मूल्यों को महत्व देता था, यह उनके जीवन तथा संपत्ति का रक्षक था, यह शक्तिशाली, सुसंगठित और इससे भी अधिक इसलिए क्योंकि यह संगठन प्रजातांत्रिक मूल्यों में आस्था रखता था ।

संगठन-

सर्वखाप पंचायती संगठित अद्वितीय तथा विचित्र प्रकार का संगठन था । इसके रक्षा सेवा तथा सहायता के अलग-अलग विभाग थे । केवल पुरुष ही इस संगठन के कार्यों में भाग नहीं लेते थे बल्कि हजारों वीर नारियां भी संकट के समय देश(हरियाणा) या सर्वखाप पंचायत के प्रभुत्व वाला इलाका) पुकार पर अपना शौर्य प्रदर्शन करने के लिए युद्ध के मैदान में वीरता दिखाती थी । देव प्रकाश तथा जैनुद्दीन, भाट सर्वखाप पंचायत, सरहिंद(पंजाब) की लड़ाई वि॰सं॰ 1355/1298 ई॰का वर्णन करते हुए महान वीरांगना भगवती देवी के शौर्य का वर्णन करते हैं तथा बतलाते हैं कि भगवती देवी के नेतृत्व में नारियों की 28,000 सेना थी । देश की रक्षा का पूर्ण दायित्व मल्ल योद्धाओं पर था जिन्हें मुस्लिम काल में पहलवान के नाम से जाना जाने लगा । युद्ध संबंधी सभी प्रकार का उन्हें पूरा प्रशिक्षण दिया जाता था । मल्लों पर कुल, खाप व देश को पूरा विश्वास था । मल्ल सेना का गठन गांव, मंडल, खाप, प्रांत व देश आधार पर किया जाता था । मल्लों की परीक्षा ली जाती थी जिसमें सब खापों के सरदार-प्रमुख सम्मिलित होते थ । जो सबसे ताकतवर व फनजंग का माहिर होता था सब खाप उसे अपना प्रधान सेनापति चुनती थी । परीक्षा पदों के अनुसार होती थी तथा यह अधिकतर ये परीक्षाएं आसोज या फाल्गुन मास(सितंबर व फरवरी) में ली जाती थी ।

मल्लों का जीवन सादा, स्वभाव शील तथा भोजन सात्विक होता था । उन्हें गांव से बाहर अखाड़ों में रहना पसंद था । मेरठ जिले का दोघट नामक स्थान युद्ध विद्या का प्रमुख केंद्र था जहां मल्ल योद्धाओं को तीर ~~अर्थात्=अस्त्र चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता था~~ बरछी, धनुष-बाण, तलवार, भाला, तवर, त्रिशूल, खुकरी, बिच्छवा आदि अस्त्र चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता था । शूरवीर योद्धा खांडा नामक अस्त्र का प्रयोग करते थे जो तीन तेज धार वाला हथियार था तथा यह अस्त्र इतना मजबूत व तेज धार वाला होता था कि इसके एक ही बार में किसी सिंह या हाथी के सूंड के टुकड़े-टुकड़े कर डालता था । बाद में चल कर बारूद, शस्त्र, कराबीन व बंदूक आदि का भी प्रयोग किया जाने लगा । रक्षा हेतु ढाल तथा कवच का प्रयोग किया जाता था । मल्ल

योद्धाओं की गर्मी-सर्दी आदि का कष्ट सहने की आदत डाली जाती थी। मीलों तक पथरीली, कंकरीली, काँटों वाली तथा ऊँची-नीची भूमि पर उन्हें दौड़ाया जाता था। चरित्र हीन मल्लों को समाज में अति तुच्छ समझा जाता था। मल्लों को गाँव में कम ही जाने दिया जाता था। उन्हें स्त्रियों से दूर रखा जाता था ताकि उनका चरित्र न बिगड़ सके। घी, दूध की उन्हें कोई मनाही नहीं थी। ब्रह्मचर्य, सात्त्विक भोजन, व्यायाम, दंड बैठक, दौड़ना, हथियार चलाना तथा कुश्ती लड़ना आदि की उन्हें शिक्षा दी जाती थी। नांगल नामक गाँव में मल्ल योद्धाओं के भोजन के लिए एक सौ भैंसे रखी जाती थी। मल्ल सबको अपना मानता था तथा सब मल्लों को अपना मानते थे। सर्वखाप के पंचों को सब मल्लों का नेतृत्व दिया जाता था।

मल्ल विभाग में दो प्रकार के सैनिक होते थे-पैदल तथा सवार। हर गाँव में 5-50 तक घोड़े रखे जाते थ। मल्ल सेना को दो भागों में विभाजित किया गया था। इसमें एक भाग वह होता था जो युद्ध के प्रारंभ घेरे से अंत इसक अंत तक लड़ता था तथा दूसरा भाग एक प्रकार से सुरक्षित भाग था जो गुरिल्ला युद्ध विधा में प्रवीण होता था। मल्ल सेना के इस भाग को युद्ध क्षेत्र में तभी भेजा जाता था जब युद्ध चरम सीमा पर पहुंच चुका होता था। किसी युद्ध में भाग लेने के लिए जाते हुए सैनिक "ओम हरि हर महादेव की जय, जन्म भूमि की जय तथा राम-कृष्ण की जय" का उच्चारण करते थे।

हरियाणा सर्वखाप पंचायत की मल्ल सैन्य शक्ति पूर्व देश में विख्यात थी व दूर-दराज के इलाकों में वहाँ की सेना को प्रशिक्षण देने के लिए इस सेना को आमंत्रित किया जाता था। वि॰सं॰ 1476/1419 ई॰ में विजयनगर के शासक देव राय राणा ने सर्वखाप पंचायत को इसी संदर्भ में एक चिट्ठी लिखी थी जिसमें इसके नेताओं से प्रार्थना की थी कि वे अपनी सेना के कुछ योद्धाओं को उनके यहाँ के सैनिकों को प्रशिक्षण देने के लिए भेजें। वह पत्र इस प्रकार था- "पंचायत के सब पंचों को आदर सत्कार के पश्चात प्रार्थना है कि मुझे यात्री संत (हरिगिरी गुसाईं) से ज्ञात हुआ है कि सदा से हरियाणा भूमि में वीरों, महापुरूषों का जन्म होता रहा है जिन्होंने सदैव देश की रक्षा की है। इसलिए हमारे यहाँ 30 मल्ल भेज कर सेना को पारंगत करने की कृपा करें ताकि हम यवनों से छुटकारा पा सकें। इसी उपकार के संदर्भ में विजयनगर के राज दरबार में ईरान के बादशाह के राजदूत अब्दुल रजाक के एक मंत्री ने कहा था कि "विजयनगर की सेना बड़ी शक्तिशाली है। इस सेना को युद्ध विधा में पारंगत वाले हरियाणा के प्रसिद्ध वीर पहलवान हैं। यही नहीं विश्व प्रसिद्ध ईरानी पहलवान रूस्तम ने भी मल्ल कला का ज्ञान भारत देश से ही प्राप्त किया था। जिस समय वह मल्ल शिक्षा प्राप्त करके अपने देश वापस लौटा तब वहाँ जब उससे यह पूछा गया कि भारत से आप क्या लाए हैं तब उसने जवाब दिया था कि-

"ब्रह्मचारियों की विद्या लाया हूं । अब इस क्रिया से मुझे इतना भरोसा है कि यदि आकाश में जंजीर लटकी हो तो इसे खींच कर जमीन से मिला देता ।"

सर्वखाप पंचायत का सैनिक संगठन(मल्ल विभाग) गुरिल्ला युद्ध पद्धति का जन्मदाता था । शिवाजी की सेना को गुरिल्ला(छापामार) युद्ध पद्धति का ज्ञान देने का श्रेय सर्वखाप पंचायत के इसी सैनिक संगठन को जाता है । सर्वखाप पंचायत के दस्तावेजों से यह जानकारी मिलती है कि छत्रपति शिवाजी की सेना को प्रशिक्षण देने के लिए सर्वखाप पंचायत के मल्ल योद्धा शिक्षक के रूप में बुलाए गए थे । इस बारे में सर्वखाप पंचायत के गुरू पं॰ कान्हाराम द्वारा लिखित दस्तावेज जो उन्होंने पं॰ जोगराम की पोथी से उतारा था-में विवरण इस प्रकार है "गुरूजी (समर्थ गुरू द रामदास) ने हरियाणा आते ही सर्वखाप के 9 मल्लों को अपने देश (महाराष्ट्र) में प्रशिक्षण देने के लिए भेज दिया था । ये 9 मल्ल रात को छापामार के पूरे योद्धा थे । इन्होंने छापामार लड़ाई का कार्य महाराष्ट्र देश में सिखाया था । गुरूजी महाराज ने कहा था,मेरे भेजे हुए जो योद्धा दक्षिण में गए हैं उन्होंने बड़ा नाम पाया है अभी दूत चिट्ठी लाया है जिसमें यह संकेत मिला है कि आपके भेजे हुए योद्धाओं ने हमारे देश(महाराष्ट्र) को लड़ाई की नई नीति सिखाई है जिसमें थोड़े से योद्धा बड़ी से बड़ी सेना को मार भगावें और इस झपट्टामार के कार्य को हमारे देश में बड़े उत्साह के से जनता अपना रही है ।" वह उन जाट वीरों का धन्यवाद देता है जिन्होंने यह नई खोज चलाई । छापामार सर्वखाप पंचायत के संगठन द्वारा भारत देश के दूर-दूर के भागों में फैल गई थी । इन जाटों ने मुहम्मद गोरी, नादिरशाह तक पर छापे मारे थे । ये खोज सर्वखाप हरियाणावासी जाटों तथा उनके साथी दूसरी जातियों ने की थी । इसी संदर्भ में पं॰कान्हाराम अपने एक अन्य दस्तावेज में लिखते हैं कि "जाट छापामार लड़ाई में सबसे अगुआ थे । रात को छापा मारते थे । रोशनी पटेरी की बालों को जला कर करते थे । कभी-कभी मसाल भी जलाते थे । गांव-गांव में अखाड़े थे जिनमें योद्धा छापामार युद्ध की शिक्षा पाते थे । इस लड़ाई को झपट्टामार भी कहते थे ।"

सर्वखाप पंचायत में सम्मिलित सभी जातियों ने मिल कर एक ऐसी सैन्य रणनीति का विकास किया था जिसे देख शत्रु भी आश्चर्यचकित रह जाते थे । उदाहरणार्थ हर गांव की चौपाल की अटारी पर बड़े-बड़े दो दमामे रखने की व्यवस्था थी जिन्हें "टामक" के नाम से जाना जाता था । अटारी पर हर समय पहरेदार रहते और जब भी कोई खतरा महसूस करते तो अपने टामक बजा देते । आवाज दूसरे गांव में पहुंचती तो वहां के पहरेदार भी टामक के द्वारा अगले गांव तक संदेश भेजते और इस तरह

देखते-देखते कुछ ही घड़ियों में सूचना दूर-दूर तक पहुंच जाती । टामक बजाने की शैली इस तरह की होती थी जिससे संदेश का संकेतों के माध्यम से दूर-दूर तक प्रसार हो जाता और हर गांव के सैनिक लड़ने-मरने के लिए तैयार हो जाते ।

सर्वखाप पंचायत के भाटों का उत्तरदायित्व केवल इसका इतिहास लिखने मात्र तक सीमित नहीं था बल्कि इस इतिहास की सुरक्षा का दायित्व भी काफी सीमा तक इन्हीं लोगों का था । मुस्लिम शासन की स्थापना के कुछ समय पश्चात जब देश के इतिहास को नष्ट किया जाने लगा तब पंचायती इतिहास की सुरक्षा का भार बैताल नामक भाट को सौंपा गया । वि॰सं॰ 1261/1204 ई॰ में बैताल नामक जगा भाट ने स्थान-स्थान पर पंचायत करके 125 जगा भाटों का एक दल छांट कर हरिद्वार के पहाड़ों में उन्हें ले जाकर एक सभा की और इतिहास को सुरक्षित रखने के लिए एक नई भाषा का निर्माण करवाया । इस भाषा के अक्षरों और आंकड़ों को बनाने वाले बैताल,जगताल,हरिताल,मानुताल और प्रेमताल नाम के पांच जगा भाट थे जिन्होंने इस्सोपुर टील,हस्तिनापुर,रोहतक,शिकारपुर,वृंदावन तथा हरिद्वार आदि स्थानों पर पाठशालाएं स्थापित की । इन जगा भाटों द्वारा तैयार की गई भाषा में अक्षरों के स्थान पर लकीरों का प्रयोग किया जाता था ।

सर्वखाप पंचायत के कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए इसे कई विभागों में बांटा गया था । मुख्य विभाग इस प्रकार थे-

1-चरित्र निर्माण विभाग-

इस विभाग में एवं दूसरे विद्वान स्त्री-पुरूष होते थे । इनका मुख्य कार्य ईश्वर भक्ति,सदव्यवहार,पुरूषार्थ,संगठन,सादगी से रहना,सादा भोजन करना तथा ईमानदारी से कमा कर अपना जीवन निर्वाह करना आदि बातों पर बल देकर चरित्र निर्माण में योगदान देना था ।

2-निरीक्षक विभाग-

इस विभाग में उच्च कोटि के विद्वान,साधु-संत व स्त्री-पुरूष सम्मिलित होते थे जिनका संबंध प्रत्येक विभाग से होता था । इस विभाग के पास एक बड़ा रजिस्टर होता था जिसमें प्रत्येक विभाग के कार्यों का निरीक्षण करके, टीका टिप्पणी कर वास्तविकता को प्रमाणित किया जाता था । पं० कान्हा राम समय-समय पर पंचायती पाठशालाओं तथा मल्ल खाड़ों व मल्ल प्रदर्शनों का निरीक्षण करते थे ।

इस विभाग की सहायता के लिए एक सहायक विभाग होता था जिसमें

उपरोक्त विभाग की भाँति योग्य एवं उच्च कोटि के विद्वान स्त्री-पुरुष होते थे । यह विभाग निरीक्षक विभाग की अधीनता में रह कर प्रत्येक विभाग में अपना कार्य करते थे तथा अपने कार्य का लेखा-जोखा निरीक्षक विभाग के सम्मुख प्रस्तुत करते थे ।

3-प्रचारक विभाग-

इस विभाग में उच्च कोटि के अनुभवी ईश्वर भक्त व सदाचारी, विद्वान स्त्री-पुरुष व साधु-संत होते थे । इस विभाग का निर्माण करते समय प्रमाणित लेखा को देख कर सदाचारी व अनुभवी व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता था । यह विभाग अत्यंत विस्तत होता था जो गाँव-गाँव, चौपाल-चौपाल व घर-घर पहुँच कर ईश्वर भक्ति, सदाचार तथा देश प्रेम का पूर्ण रूप से प्रचार करते थ । यज्ञ, हवन, भजन व कीर्तन पर पूरा बल दिया जाता था ।

इस विभाग का कार्य स्वतंत्र होता था परंतु आवश्यकतानुसार चरित्र-निर्माण विभाग के नियंत्रण में रह कर सब कार्यों का लेखा-जोखा चरित्र निर्माण विभाग को दिया करते थे । शिक्षा प्रसार का कार्य इसी विभाग को करना होता था । शिक्षा तीन प्रकार की होती थी-सामान्य शिक्षा, धार्मिक शिक्षा तथा मल्ल शिक्षा । भाषा की दृष्टि से संस्कृत, हिंदी, उर्दू तथा फारसी भाषाओं का ज्ञान दिया जाता था । शिक्षा प्रसार के लिए स्कूल खोलना व अन्य सभी प्रकार का प्रबंध करना इसी विभाग का उत्तरदायित्व था । शिक्षा के प्रसार के लिए सर्वखाप पंचायत ने शिकारपुर, दोघट, बरनावा, टीकरी, बल्लभीपुर, नांगल, थानेश्वर, ~~[illegible]~~ सिसौली, विक्रमपुर, प्रेमपुरी (मुजफ्फरनगर) आदि स्थानों पर अपने स्कूल खोल रखे थे । इस्सोपुर टील नामक स्थान पर लगभग 150 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे । मल्लों, अध्यापकों व अन्य कर्मचारियों के लिए घी, दूध के पबंध के लिए हजारों गाय-भैंसें रखी जाती थी । शिकारपुर (मुजफ्फरनगर) में 25,000 गाएं थी जिनमें से 12000 प्रत्येक समय दूध देती थी । विद्यालयों के व्यय के प्रबंध के लिए फसल पकने पर आसपास के इलाकों से खाद्य सामग्री इकटठी की जाती थी । इस कार्य के लिए चंदा भी इकट्ठा किया जाता था जिसका बड़ा हिस्सा मुख्य रूप से कायस्थों से मिलता था क्योंकि उस समय ये लोग उच्च पदों पर नियुक्त थे । शिकारपुर में कन्याओं के लिए एक विद्यापीठ की स्थापना वि॰सं॰ 1280/1223 ई॰ में की गई थी । बरनावा में विद्यालय की स्थापना 663 विसं/607 ई॰ में की गई थी । शिकारपुर जिसे पहले प्रधानगारी के नाम से जाना जाता था में लड़कों के लिए विद्यापीठ की स्थापना वि॰सं॰ 1270/1214 ई॰ में की गई थी । औरंगजेब ~~[illegible]~~ के समय सर्वखाप पंचायती नेता हरिराय जाट जिसे औरंगजेब ने दावत के बहाने बुला कर

Centre for Policy Studies Dharampal Archives CPS-EA-19 www.cpsindia.org

अन्य 21 नेताओं सहित उनकी हत्या कर दी थी क्योंकि दारा तथा औरंगजेब के मध्य हुए युद्ध में पंचायत ने दारा का साथ दिया था, वह अरबी, फारसी हिंदी तथा ब्रज का पंडित था तथा उसकी पत्नी अमर कौर जो कराल (बिजनौर) की बेटी थी वह तथा उसकी पुत्री हिंदी तथा फारसी की विदुषी थी ।

4-सामाजिक विभाग-

इस विभाग में 15 व्यक्तियों की एक समिति होती थी जिसमें प्रत्येक पेशे से संबंधित सदस्य होते थे । ये सदस्य अपने-अपने पेशे की देख-रेख करते थे व जो कठिनाइयां आती थी उनका निष्ठापूर्वक समाधान करते थे । हय विभाग कृषि, मजदूर, शिल्पकार, दस्तकार तथा व्यापारी आदि वर्ग की समस्याओं का समाधान कर उनकी उन्नति के लिए कार्य करता था । कृषि की उन्नति के लिए सिंचाई व्यवस्था करना, फसल पकने पर मूल्य आंकन करके भाव नियुक्त करना, अकाल के समय किसानों की सहायता करना, कर वसूल करने में राज कर्मचारियों का सहयोग देना व अधिक कर लगाने का विरोध करना आदि सर्वथा पंचायत का सामाजिक विभाग करता था । सरकार की तरफ से कर संग्रह करने में शाहजहां के समय पंच को राज्य कर्मचारी की अपेक्षा अधिक महत्व दिया गया था । व्यापारी वर्ग को लूट से सुरक्षा प्रदान करना इसी विभाग का काम था । व्यापार लेन-देन, बाट तथा क्रय-विक्रय की पूरी जांच यही विभाग पंचों के माध्यम से करता था । बिना पंचायत की अनुमति के बाजार भाव बढ़ाने की मनाही थी तथा व्यापारी वर्ग अनुचित लाभ नहीं कमा सकता था । इसी विभाग का एक सदस्य पशुओं की देख-रेख करता था । पशुओं के खरीदने तथा बेचने पर कर लिया जाता था । तथा यह कर पंचायत में जमा करा दिया जाता था । यह विभाग पशुओं की नस्ल सुधार का ध्यान रखते थे तथा रोगों से उनका बचाव करते थे ।

5-राजनैतिक विभाग-

इस विभाग की सात शाखाएं होती थी जो अपने-अपने कार्यों में पूर्ण निपुण होती थी । ये शाखाएं अपने-अपने विभाग में आने वाली कठिनाइयों का समाधान करती थी । इस विभाग की एक समिति होती थी जिसमें सात सदस्य होते थे जो पूर्ण रक्षा के उत्तरदायी होते थे । इस विभाग की सात शाखाएं इस प्रकार थी-

(1) गुप्तचर विभाग-

यह विभाग शत्रु की गतिविधियों पर सतर्कता से ध्यान रख कर राजनैतिक विभाग को सूचित करता था व तदानुसार योजनाएं बनाता था ।

Centre for Policy Studies Dharampal Archives CPS-EA-19 www.cpsindia.org

इस शाखा का पूरे देश में जाल सा फैला रहता था । युद्ध एवं शांति दोनों समय अपने उत्तरदायित्व को यह विभाग बड़ी सतर्कता से निभाता था । आने-जाने के लिए इस विभाग के पास तेज गति के अंत ऊंट व घोड़े होते थे । पंडित कान्हाराम को पंचायत की तरफ से सवारी के लिए एक घोड़ा तथा ऊंटनी दी गई थी । ऊंटनी से बच्चे पैदा नहीं किए जाते थे तथा यह बड़ी तेज रफ्तार से दौड़ती थी । पंचायत की तरफ से अगुआ बन कर पंडित कान्हाराम मुगल दरबार तक इसी ऊंटनी पर बैठ कर जाते थे । मराठा मंडल के छोटे-बड़े नेताओं के साथ भी उसकी दोस्ती थी । कई अवसरों पर वह ऊंटनी पर बैठ कर पूना तक गए थे ।

§2§अश्वारोही विभाग-

इस विभाग में अश्व सहित बड़े निपुण, युद्ध-कला में प्रवीण, शीघ्रगामी व व्यूह रचना करने वाले मल्ल होते थे जो पूरे हरियाणा के छंटे हुए स्त्री-पुरूष होते थे व विभिन्न दलों में अपने-अपने सेनापतियों की अधीनता में बड़े उत्साहपूर्वक अपने उत्तरदायित्व को निभाते हुए हंसते-हंसते बलि वेदी पर चढ़ कर देश रक्षा के लिए प्राणों की आहुति दे देते थे । ये लोग निस्वार्थ भाव से अपने कर्तव्य का पालन करते थे तथा इसके बदले किसी प्रकार का वेतन नहीं लेते थे । देश रक्षा में प्राण न्यौछावर करने के बाद पंचायत इनके परिवार की शिक्षा व पालन-पोषण का प्रबंध करती थी ।

§3§ऊंट§4§पैदल§5§ नाविक विभाग-

उपरोक्त विभाग की भांति इन विभागों में भी सैनिक अपने-अपने सेनापतियों के नेतृत्व में रह कर अपने कार्य को कुशलता पूर्वक करते थे । मल्ल योद्धा ही पैदल सेना में सैनिक होते थे तथा इन सैनिकों की संख्या निश्चित नहीं होती थी । खेतों में काम करने वाले किसान भी पैदल सैनिक होते थे जो आवश्यकता के समय युद्ध में भाग लेते थे । किसान लोग युद्ध कार्यों के लिए ऊंट पालते थे । हालांकि सर्वखाप पंचायत का अधिकतर क्षेत्र मैदानी रहा है लेकिन फिर नदी पार करने की दृष्टि से ऐसे ही स्थानों पर युद्ध सामग्री को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने के लिए नाव इस्तेमाल में लाई जाती थी ।

§6§ शस्त्र निर्माण विभाग-

यह विभाग राजनैतिक विभाग की देख-रेख में शस्त्रों का निर्माण कर शस्त्रागार में संग्रह करके रखते थे । इन शस्त्रों का परीक्षण बड़ी निपुणता व बारीकी से किया जाता था ताकि शस्त्र युद्ध में धोखा न दे सके । शस्त्र निर्माण

के लिए कुशल कारीगर होते थे । ये लोग नि:शुल्क देश की सेवा करते थे । उनके परिवार के भरण-पोषण के लिए उन्हें अपने क्षेत्र से फसल के समय अनाज-गुड़ आदि जरूरी चीजें किसानों से मिल जाती थी । पंचायती शस्त्र निर्माण करने वाली एक जमात थी तीलम जादों की जो ऐसे तीर बनाते थे जिनकी मार 800 गज तक होती थी लेकिन 400 गज तक इन तीरों का निशाना प्राय: अचूक होता था । तिलगर नाम की एक दूसरी जाति गोली, हथगोले तथा बारूद का निर्माण करती थी । वे ऐसे गोले भी बनाते थे जिनसे रात के समय प्रकाश किया जा सके । इन सबका खर्चा पंचायत ही वहन करती थी ।

§7§ आपूर्ति विभाग-

इस विभाग को उपरोक्त सभी छह भागों में विभाजित किया हुआ था जो अपने-अपने विभाग की आवश्यकता की पूर्ति का दायित्व संभालते थे । समय पर सामग्री पहुंचाने के लिए इस विभाग के पास पर्याप्त साधन होते थे जिससे कोई कठिनाई नहीं होती थी । हर गांव में 5-50 घोड़े तक घोड़े रखे जाते थे । हर खाप में 1-5 तक हाथी रखे जाते थे तथा इसी प्रकार किसान लोग गांव में ऊंट तथा खच्चर भी इसी कार्य के लिए पालते थे ।

कार्य-

किसी भी संगठन को सुचारू रूप से चलाने के लिए कुछ नियमों का होना नितांत आवश्यक है । सर्वखाप पंचायती संगठन के लिए भी कुछ नियम बनाए गए थे जिनके सहारे पंचायत समय-समय पर आई आपत्तियों का मुकाबला करने के लिए इसकी बैठकें बुलाती थी । मुख्य नियम इस प्रकार थे-

किसी भी बैठक के प्रारंभ होने से पूर्व हवन का आयोजन किया जाता था तथा प्रार्थना की जाती थी । इसके सदस्यों के ऊपर पवित्र गंगा जल के छींट मारे जाते थे । इसके उपरांत बैठक की कार्यवाही को चलाने के लिए एक प्रधान का चुनाव होता था जिसमें साधारण तथा किसी प्रतिष्ठित या बुजुर्ग व्यक्ति को मनोनीत किया जाता था । बैठक में चुना गया प्रधान झगड़ों से संबंधित दोनों घटकों से विचार-विमर्श करके पंचों की नियुक्ति करता था । पंचों को ईमानदारी तथा किसी एक पक्ष का साथ न देने की प्रतिज्ञा लेनी पड़ती थी ।

सर्वखाप पंचायत की साधारण बैठकें पांच वर्ष में केवल एक बार होती थी । लेकिन संकट के समय जैसे युद्ध आदि होने पर इसकी बैठकें तुरंत बुला ली जाती थी । ज्यादातर बैठकें खापों की ही होती थी जो उनके अपने ही क्षेत्र में वहां की समस्या से संबंधित विषय पर बुलाई जाती थी । इन खाप की बैठकों में आसपास के क्षेत्र की तीन-चार खापें भाग लेती थी । खाप

बैठकों में यदि दो से अधिक खाप भाग लेती थी तो ज्यादातर मोटे तौर पर इसे सर्वखाप पंचायत की बैठक का नाम दे दिया जाता था । खाप का वजीर बैठक में भाग लेने वाले मुख्य प्रतिनिधियों के नाम, गांव, थांबा, खाप या सर्वखाप के आधार पर खाप के रजिस्टर में दर्ज करता था । थांबा एक ही खाप के आसपास के कुछ गांवों के प्रतिनिधियों की सभा होती थी । इसे एक प्रकार से उपखाप के नाम से जाना जा सकता है ।

जिस समय सभा की कार्यवाही चल रही हो उस समय हुक्का या नशे की हर चीज त्याग दी जाती थी । सभा की कार्यवाही के दौरान किसी प्रकार का भी खाना-पीना वर्जित था । इस समय हंसने की भी मनाही थी । बैठक में चुने गए प्रधान या अध्यक्ष की अनुमति के बिना कोई भी व्यक्ति नहीं सकता था । यदि वह ऐसा करता था तो उसे सभा से बाहर निकाल दिया जाता था । यदि कोई व्यक्ति किसी जरूरी व आकस्मिक काम की वजह से सभा में से उठ कर जाना चाहता हो तो वह ऐसा बिना दूसरे व्यक्ति को बाधा पहुंचाए ऐसा कर सकता था । यदि कोई विशिष्ट व्यक्ति किसी बीमारी तथा अन्य दूसरे कारण से सभा की कार्यवाही में भाग लेने में असमर्थ रहता था तो वह अपने स्थान पर अपना प्रतिनिधि भेज सकता था ।

यदि थांभा कौंसिल (सभा) में 2-5 प्रतिनिधि विभन्न गांवों से आकर भाग लेते थे तो कोरम पूरा समझा जाता था, एक खाप कौंसिल में 3 से 15 प्रतिनिधियों का भाग लेना अनिवार्य था, ये प्रतिनिधि आसपास के इलाके की प्रत्येक थांभा से संबंधित होने जरूरी थे जबकि सर्वखाप कौंसिल में प्रत्येक खाप से 5 से 21 प्रतिनिधियों का भाग लेना अनिवार्य था । संकटकालीन समय में 25 व्यक्ति मिल कर छोटी पंचायत कर सकते थे । किसी भी एक या दस व्यक्तियों को पंचायत की मर्जी के बिना कुछ भी करने का अधिकार नहीं था । किसी झगड़े का निपटारा करने के लिए यदि पंचायत 5 पंचों को भेजे तो वह पूरी पंचायत समझी जाती थी ।

किसी एक व्यक्ति या सारे गांव पर यदि किसी प्रकार या संकट आ जाए या किसी व्यक्ति को कोई आकस्मिक दुख हो जाए तो ऐसी स्थिति में आठ पहर में पंचायत की बैठक बुलाई जा सकती थी । इस बैठक को बुलाने के लिए मंडल, थांभा या खाप का मंत्री या पांच सज्जन व्यक्तियों की मंजूरी जरूरी थी । 18 खापों या सर्वखाप पंचायत की मीटिंग चौबीस पहर में बुलाई जा सकती थी । मुगल शासक के पतनोन्मुख के समय जब देश में अराजकता थी तब अठारह खापों के अठारह आलीम पंचायत कर सकते थे । ये पंचायतें पूरी मानी जाती थी । चौबीस से 48 घंटे में सब इकट्ठे हो जाते थे तथा अपनी-अपनी खाप की जिम्मेदारी लेते थे । इस तरह की सूचना भेजने वालों को वेतन दिया जाता था ।

दोष और दंड देने का अधिकार-

किसी पुरूष या स्त्री द्वारा चोरी करने पर उसे चोरी की कीमत देनी पड़ती थी । यदि इस प्रकार का अपराध कोई व्यक्ति चार बार कर देता या तो उसे गांव से निकाल दिया जाता था। किसी भी व्यक्ति द्वारा ठगी,गबन,आगजनी करने पर,किसी को शारीरिक यातना देने पर किसी को झांसा देने पर या किसी प्रकार के कलंक का कार्य करने पर उसके ऊपर जुर्माना किया जाता था ।

यदि कोई व्यक्ति किसी पशु की हत्या कर देता था,विशेष तौर पर गाय की हत्या तो उसे मृत पशु की पूंछ को लेकर आसपास के इलाके के लोगों से माफी मांगनी पड़ती थी तथा स्वयं को शुद्ध करने के लिए गंगा नदी में स्नान करना पड़ता था । जब तक वह पश्चाताप नहीं करता था उसे अशुद्ध समझा जाता था । कोई भी व्यक्ति साथ बैठ कर न हुक्का पीता था तथा न ही खाना खाता था । एक प्रकार से उस व्यक्ति का सामाजिक बहिष्कार किया जाता था । भूल से गलती करने वाले को माफ कर दिया जाता था । जान-बूझ कर गलती करने वाला व्यक्ति यदि प्रायश्चित न करे तो उसके हुक्के-पानी का संबंध विच्छेद कर अलग कर दिया जाता था ।

यौन संबंधी अपराधों में शारीरिक यातना दी जाती थी । जैसे पीटना तथा कोड़े लगाना आदि और इस प्रकार की यातना समाज में बहुत ही निंदनीय थी । एक ही गोत्र के लड़के तथा लड़कियां आपस में एक दूसरे को भाई-बहिन मानते थे । चाहे वे अलग-अलग गोत्र के ही क्यों न हों । एक ही गांव में बसे दूसरे गांव के लड़के-लड़कियों के संबंध भी भाई-बहिन जैसे थे । किसी भी कसूरवार व्यक्ति को दंड देने का एक और तरीका यह था कि उस व्यक्ति के उस गलत काम की सार्वजनिक स्थानों पर निंदा की जाती थी । किसी भी कसूरवार का गांव या जाति से बहिष्कार जैसी कड़ी सजा केवल बहुत बड़ा अपराध किए जाने पर दी जाती थी । यह अपराध या तो किसी व्यक्ति की हत्या से संबंधित हो सकता था या फिर अपने किसी ऐसे नजदीक रिश्ते वाले के साथ यौन संबंध स्थापित करना होता था जिसे समाज में अत्यंत निंदनीय समझा जाता था । आम तौर पर कसूरवार को यह सजा दी जाती थी कि वह आसपास के गांव में वहां के बुजुर्गों से अपने किए गए कसूर की गलती की माफी मांगे ।

महत्व या भूमिका

सर्वखाप पंचायत के संगठन ने अपने कार्य क्षेत्र में आने वाले लोगों के सामाजिक,राजनैतिक,धार्मिक तथा आर्थिक जीवन को बहुत अधिक प्रभावित किया है । यह न्यायप्रिय तथा सदाचारी व्यक्तियों का संगठन था

Centre for Policy Studies Dharampal Archives CPS-EA-19 www.cpsindia.org

अपने परंपरागत रीति-रिवाज तथा परंपराओं की रक्षा करता था। यह इस संगठन की शक्ति एवं शुद्धता का ही परिणाम था कि शासक वर्ग भी इसे पूरा मान देता था तथा इसके द्वारा किए गए निर्णयों को आदर की दृष्टि से देखता था। इसी संदर्भ में वि॰सं॰ 1555/1599 ई॰ में मथुरा में हुई सभा में मावूद शाह, एक संत ने कहा था "आपका यह संगठन अत्यंत पवित्र, चरित्रवान, न्यायप्रिय एवं प्राचीन है। इसलिए बड़े बादशाहों को भी इसके सामने झुकना पड़ता है। मैं स्वयं इस संगठन का बहुत मान करता हूं। आपकी पंचायतों का कार्य मुझे बहुत पसंद है। ये लोग सच्चे देश, समाज तथा राष्ट्र सेवक हैं व बिना वेतन काम करते आए हैं। मैं तो ऐसे संगठन का होना इस देश का सौभाग्य मानता हूं।"

इस संगठन ने अनेक शासकों को उनके राज्य सिंहासन की रक्षा करने में मदद की है तथा ऐसे कई शासकों के साथ युद्ध किए हैं जिन्होंने निरंकुश शासन की स्थापना की कोशिश की है। अलाउद्दीन खिल्जी, दिल्ली सल्तनत शासक ने अपने मौलवियों को सलाह दी थी कि वे पंचायत के कार्य में किसी प्रकार की दखलअंदाजी न करें। इस संगठन के संपर्क में आने के बाद मुगल सम्राट बाबर ने इसकी प्रशंसा में ये शब्द कहे-"हरियाणा सर्वखाप पंचायत के मल्ल योद्धा और पंचायतों के पंच मुल्क हिंद की सबसे बड़ी शख्सीयत हैं। इस वास्ते में बालापन खाप के गांव सोरम के वजीरों का और हरियाणा की खापों के सब पंचों का तहेदिल से शुक्रगुजार हूं और सोरम के चौधरी को एक रुपया इज्जत और एक सौ पच्चीस रुपए की पगड़ी की भेंट जिंदगी भर देता रहूंगा।" मुगल सम्राट शाहजहां के राज्यारोहण के समय उसने सर्वखाप पंचायत के 15000 प्रधानों को आमंत्रित किया था तथा इस अवसर पर पंचायत की ओर से पं॰ भगवती प्रसाद ने शाहजहां को हल्दी का टीका लगाया था।

अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर द्वारा 1 जुलाई 1857 को सर्वखाप पंचायत के नाम दिया गया भाषण इस संगठन की महत्ता पर काफी प्रकाश डालता है। भाषण के मुख्य अंश इस प्रकार हैं "मुल्क हिंद में रहने वाले हर कौम और मजहब के लोगों से मेरी इल्तजा है कि इस नामुद फिरंगी कौम से मुल्क की हुकूमत को छीन कर मुल्क के काबिल, समझदार और खुदापरस्त लोगों की एक पंचायत इकट्ठी करो और उसके हाथ में मुल्क सौंप दो या हरियाणा की सर्वखाप पंचायत की तरह से सारे मुल्क की एक पंचायत बनाओ। इन पंचों में से एक पंच पंचायती तरीके से मुल्क का आइना बना कर हुकूमत को चलाए। मैं अपने सारे अख्तियार उस पंचायत को बड़ी खुशी के साथ देता हूं।" मुगल सम्राट औरंगजेब जिसने पंचायत के कार्यों की अनदेखी की सिवाय मुगल साम्राज्य के पतन के कुछ भी न कर सका।

सर्वखाप पंचायत के दस्तावेज इस बात को सिद्ध करते हैं कि पंचायतें स्थानीय प्रशासन को चलाती थीं तथा वे एक प्रकार से अर्ध-स्वतंत्र संगठन थी । चाहे शासक वर्ग किसी भी वंश से संबंधित रहा हो लेकिन पंचायतें अपने कार्य क्षेत्र में आने वाले भाग में राजस्व इकट्ठा करती थी तथा राज कर्मचारियों की इससे मदद करती थी ।

परंपरागत सामाजिक मूल्यों को बनाए रखने में सर्वखाप पंचायत का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । पंचायती क्षेत्र में रहने वाले लोग विद्वान एवं साधु-संतों का बहुत आदर करते थे तथा उनके उपदेशों पर अमल करते थे । सर्वखाप पंचायत के अभिलेखों से यह भी सिद्ध होता है कि अन्य दूसरे क्षेत्रों की अपेक्षा सर्वखाप पंचायत के क्षेत्र के अधीन के किसानों ने अपने उत्पादन का एक बड़ा अंश पंचायत की सेवा में लगाया तथा इसका कभी भी विरोध नहीं किया । लेकिन यदि शासक वर्ग ज्यादा लगान वसूल करना चाहता था तो पंचायत इसका हर प्रकार से विरोध करती थी ।

सर्वखाप पंचायत के इस संगठन ने सभी जातियों एवं धर्म के लोगों में भाईचारे तथा एकता की भावना पैदा की । उपलब्ध सामग्री के आधार पर कहीं ऐसा उल्लेख नहीं मिलता जब जो जातियों या धर्म के लोगों के बीच मन-मुटाव चरम सीमा पर पहुंच गया हो । मुगल शासन के दौरान जाटों का एक राजनैतिक शक्ति के रूप में उत्कर्ष इसी संगठन की वजह से हो सका । । उत्तरी भारत में कृषि की उन्नति काफी हद तक इसी संगठन के सहयोग पर निर्भर थी ।

Centre for Policy Studies Dharampal Archives CPS-EA-19 www.cpsindia.org